कुमाउॅनी लोक मुहावरे

संकलन – डॉ सरस्वती

सहायक – मनोज प्रसाद

मुहावरे

1. झिमौड़ जस पुड़।

ततैया का जैसा झुण्ड।

आक्रामक समूह।

2. डाब जसि।

डिबिया जैसी।

सजीली वस्तु।

3. खुटौ ज्वत ख्वार में ।

पैर का जूता सिर में।

अयोग्य व्यक्ति को सम्मान मिलना।

4. कैक खायो नै बिगायो।

किसी का खाया न बिगाड़ा।

कोई ऐसा काम न करना जिससे किसी को हानि हो।

5. ढुङ में धरण।

पत्थर में रखना।

त्याग करना।

6. थिरी जाण।

रुक जाना।

थम जाना।

7. आग हालि बेर पानि हिं दौड़न्यां।

आग लगाकर पानी के लिए दौड़ने वाला।

8. तिति निलै।

कड़वी चीज गिलाई करना।

बिना स्वाद लिए ही कोई चीज निगल लेना।

9. पनबिरालु जस।

भीगी बिल्ली जैसा।

10. थुपुड़ लागण।

ढेर लगना।

बहुतायत में होना।

11. आँख फुस्र्यून।

आंख सफेद कर देना।

12. पसीनाकि धार।

पसीने की धार अर्थात मेहनत की कमाई

13. छातिक चार हुन।

अर्थ– छाती के चार होना

भावार्थ–बहुत दुःख होना।

14. कालमूख कर।

अर्थ– काला मुंह कर

भावार्थ– देष निकाला हो जा।

15. छौल पुजै।

भूत को पूजा जैसा करना।

अव्यवस्थित कार्य करना।

16. डीठ लागण।

नजर लगना।

बुरी नजर का प्रभाव होना।

17. थिर थाम करण।

स्थिर करना।

रोकथाम करना।

18. आँख फरकूनं

आँख दिखाना।

19. नाक हालन।

अर्थ– नाक कटाना

भावार्थ– इज्जत गंवाना।

20. चूख जै चाटू माम जै भेटू।

चूक जो चाटू मामा से जो मिलू।

दो मनपसंद काम एक साथ सामने आने पर भ्रमित हो जाना।

21. चिटिठ खितै।

चिट्ठी डलवायी।

फटाफट खाना।

22. घोत्या देखून।

अंगूठा दिखाना।

23. छाम खान।

चक्कर खा जाना।

24. दांत लगूण।

दांत लगाना।

अर्थात तू–तू मैं–मैं होना।

25. तुरन्त दान महा कल्याण।

तुरन्त दान करके पुण्य कमाना।

26. गांठ पाणि रै।

रट रखा है।

27. आँखान छार हलै।

आंखों में धूल झौंकना।

28. काल मूख हैग्यो।

अर्थ– काला मुंह हो गया

भावार्थ–लापता हो जाना।

29. लाल– पील हुन।

अधिक गुस्सा आना।

30. अँ कून विन का्थ बिगाड़न।

हुंकार देने के बिना कथा बिगाड़ना।

31. यकलकटू।

एकाकी

एकाकीपन को पसंद करने वाला।

32. मुनि रै।

वष में किया हुआ।

33. भी पिंणि ने रून।

जमीन पर पैर न रखना।

34. छौल लगै।

भूत लगा हुआ जैसा।

असामान्य हरकतें करने वाला।

35. अन्यार घरौक चिराग।

अंधेरे घर का उजाला अर्थात एकमात्र पुत्र।

36. कायापल्टि गै।

काया ही पलट जाना।

अर्थात पूर्ण परिवर्तन।

37. पिण्ड छुडून।

पीछा छुड़ाना।

38. जब तक सांस तब तक आस।

जब तक सांस है तब तक आषा भी है।

39. इज्जत उतारण।

इज्जत उतारना।

40. हात सार।

अर्थ– हाथ बटाना।

भावार्थ– काम में मदद करना।

41. बट्ट लगून।

नुक्ष निकालना।

42. अंध समझण।

मूर्ख समझना।

43. करम भोगना।

कर्मो का फल मिलना।

44. खुचिडियाट करण।

दोष निकालना।

45. खुट टेकण।

पैर टिकाना।

अपने लिए थोड़ा सा स्थान बनाना।

46. उल्लु बासण।

उल्लू बोलना।

अषुभ संकेत।

47. अकास टुटण।

आकाष टूटना। विपत्ति आना।

48. चंडी चणण।

चंडी बनना।

चण्डिका का रूप धारण करना।

49. जबर देखि सबर।

जबर देखकर सबर।

सामर्थ देखकर सब्र करना।

50. खुट ध्वेण लैक।

पैर धोने लायक।

श्रद्धास्पद।

51.कच्च कबिल।

कच्चा कबीला।

52. अकास पताल करण।

आकाष पाताल एक करना।

अधिक परिश्रम करना।

53. इथ भ्योल उथ कभाड़ उथ रौ रवाड़।

इधर पहाड़ उधर पथरीला विस्तार।

54. गोरु जस।

गाय जैसा।

सरल स्वभाव का।

55. चुरबुटि लगै।

बेचैनी होना।

56. उसई गदू जस कपकै खाण।

उबाले हुए कद्दू की तरह खा जाना।

आसानी से आत्मसात करना।

57. खोरि फुटण।

सिर फूटना।

दुर्भाग्य होना।

58. उजड़न आयो भाइ सतायो।

उजड़ने के दिन आए भाई को सताया।

आपसी वैमनस्य।

59. काचौ वैद्य जी काव।

कच्चा वैद्य जी का काल।

60. गल ठूणा।

बात बात पर गाली देने वाला।

61. काठै नौ तैरनेरै भै।

काठ की नाव तैरती ही है।

61. उल्ट बल्द जोतण।

उल्टे बैल जोतना।

असंगत कार्य करना।

62. ऊण भल सुख जाण भल दुख।

सुख का आना अच्छा दुख का जाना अच्छा।

63. खुरस्यनी कोस जस।

मिर्च की फली जैसा।

बहुत तेज अथवा चालाक।

64. कदवा में तीर हणै।

कद्दू में तीर मारना।

65. उताण हैं पकै टोटिल हैं खै।

लेटकर पकाया लेटकर खाया

66. ख्वाट करम हुण।

खोटे कर्म होना।

67. कोकै लगै।

गले में खुजली लगना।

68. घाट–घाटौक पानि पिन्यां।

घाट घाट का पानी पीने वाला।

69. उल्टि छुरि गदू में।

उल्टी छुरी कद्दू में।

70. गाल में पकड़ै।

गले में पकढाई।

71. छन आंखै भ्योव पणन।

आंख होकर भी गिर पड़ना।

जान बूझकर गल्ती करना।

72. जतु आमद उतू लोब।

जितनी आमदनी उतना ही लालच।

73. पेट पसि ग्यो।

पेट में गढ जाना।

किसी बिमारी का गढ जाना।

74. इतर हारौ तेल जितौ।

इत्र हारे तेल जीते।

इत्र उड़ जाता है तेल भीग जाता है।

75. चमन हुण।

चमन होना।

आराम होना।

76. खाक हैग्यो।

नष्ट हो जाना।

77. ढुङ फरकै रै।

पत्थर पलटाना।

किसी स्थान में न जाने की कसम खाना

78. आग में खुट राखन।

अंगारों पर पैर रखना।

79. महाभरत है र्‌यो।

महाभारत हुआ है।

बहुत झगड़ा होना।

80. जस त्यर बा्ज उस म्यौर नाच।

जैसा तेरा बाजा वैसा मेरा नाच।

चुगली करना।

81. कल्ज में इंड पणन।

कलेजे में ठंडक पणना।

82. आ्स लागण।

आस लागण।

उम्मीद होना।

83. चानिक बाव निकालण।

चण्डी के बाल उखाड़ना।

अत्यधिक परिश्रम करवाना।

84. मुख लै मुटिक हाणै।

अर्थ– मुंह में मुक्का मारा जैसा।

निराष होना।

85. उल्ट बा्ट

उल्टा रास्ता।

विपरीत क्रम में घटना घटित होना।

86. उजड़न बाट कांणै–कांण।

उजड़ने की राह में कांटे ही कांटे।

बुरे वक्त में समस्यायें ही समस्यायें।

87. कान बणि रून।

अंजान बने रहना।

88. नून चूख नै खोजन।

नमक,चूक भी न खोजना।

भावार्थ– कोई परवाह नही करना।

89. खालि खसी बुड़ि पातर।

खाली ठाकुर बूढी वैष्या।

90. गव लागण।

गले लगना।

आलिंगन करना।

91. आपू मरौ जगतै परलय।

स्वयं मर गए तो जगत ही प्रलय।

92. छंद खितण।

छंद डालना।

बीच में बोलना।

93. काज निभूण।

कार्य निभाना।

94. इतराक घर तितर भ्यार धरू या भितर।

इतराने वाले के घर तीतर बाहर रखू या भीतर।

प्रदर्षन प्रिय होना।

95. उजड़ि गै मौ जुड़न दी तौ।

कुटुम्ब तो उजड़ गया मूंछो को ताव दिया जा रहा है।

96. गछूण।

गूंथना।

97. आ्सर हुण।

आसरा होना।

भरोसा होना।

98. चरि–चरि खाप करण।

चढ–चढ कर बोलना।

99. कौतिकी हुण।

हंसमुख होना।

उत्सवप्रिय होना।

100. ख्वार में किल गैंठन।

सिर पर जिम्मेदारी डाल देना।

101. का्न लगूण।

कंधा लगाना।

अरथी को कंधा देना।

102. गौ जौ पर नौ नि जौ।

गांव जाए पर नाम न जाए।

नाम के आगे सम्पत्ति को तुच्छ समझना।

103. जां् बसण वां सवारन।

जहां रहना वहां संवारना।

104. इनराणी फल।

इन्द्राणी फल।

केवल बाहरी रूप होना।

105. अंधों में का्ण राज्।

अंधो में काना राजा।

106. अंध अलूण पछाणिगौछ, आँख न्हाति जीभ त छौ।

अंधा बिना नमक का खाना पहचान लेता है, आंख नही है जीभ तो है।

107. एक्कै स्यूण में रात नि ब्यानि।

एक ही सपने में रात नही खुलती।

मतलब एक बार ही नही पड़ता।

108. ऐन लागण।

प्रष्न चिह्न लगना।

109. अ आ नि ऊन।

मूर्ख होना।

110. कंट काटण।

अपनी बला टालना।

111. कच्यार में धक्यूण।

कीचड़ में धकेलना।

बुराइयों की तरफ ले जाना।

112. कल्ज मोट हुण।

कलेजा मोटा होना।

किसी की परवाह न करना।

113. काठौ उल्लु।

काठ का उल्लू।

मूर्ख ।

114. कवाड़ बाग जौ हुण।

कोने का बाग जैसा।

115. हांट–भांट चस्क।

अंग–अंग षिथिल होना।

116. झाण–झुण्का समजनो।

ऐरा गैरा समजना।

117. बौं हातौक खेल।

बांये हाथ का खेलं

118. अक्त्यारि–मुक्त्यारि हुंण।

अधिकार प्राप्त मुखिया होना।

119. ओच्छो धन कुकुरै गन।

ओछे का धन कुत्ते की पाद।

120- अखड है बेर फक्कड़ हुण भल।

सब कुछ होते हुए भी किसी का हित साधन न करने वाले से तो अकिंचन होना भला।

121. औतर जाण।

अवतरित हो जाना।

षरीर में देव षक्ति का अवतरित हो जाना।

122. ऊनि गंग नाण्।

बहती गंगा में स्नान करना।

अवसर का लाभ उठाना।

123. घरौ जोगि गिद्ध, भैरौ जोगि सिद्ध।

घर का जोगी गिद्ध, बाहर का जोगी सिद्ध।

अपनी वस्तु की कद्र न करना।

124. एक गेठि दुहरि नीम जड़ि।

एक तो गेठी (असामान्य सब्जी) उस पर नीम जडी।

125. ऐल मैंस ब्याल हुं राकस।

अभी मानव शाम को राक्षष।

126. कंजड़ हुण।

कंजूस होना।

127. अकास थुकण।

आकाष में थूकना।

(निरर्थक प्रयत्न करना)

128. कटकी रूण।

चुप रहना।

129. अकलै सकल मा्य अकल बाट ईष्वर पाय।

बुद्धि की ही सब माया है बुद्धि से ही ईष्वर प्राप्त होता है।

130. कलाट पणन।

हल्ला होना।

131. खालखैचण।

खाल खीचना।

किसी को बुरी तरह पीटना।

132. काज न्यौतण।

शुभ कार्य का न्यौता देना।

133. कान ब्वेण।

कांटा बोना।

बुरे कार्य करना।

134. कौ ब्याणि।

कौए का ब्याहना।

सुअवसरों की कमी होना।

135. खा्न पुर्यूण।

खाना पूर्ति करना।

औपचारिकता करना।

136. खालि थैलि ठाणि नै हुनि।

खाली थैली खड़ी नही होती।

धन के बिना स्थिरता नही होती।

137. खुट्ट अल्जलीण।

पैर उलझना।

बंधन में पड़ना।

138. खाण हूं दौड़न।

खाने को दौड़ना।

अत्यधिक आवेष में कठोर षब्द कहना।

139. ख्वार कामल खितण।

सिर में कम्बल डालना।

धोखा देना।

140. गमगम हुण।

गमगमा होना।

मुंह फुलाना।

141. कसर रै जानि।

कसर रह जानी।

142. घोत्या देखूण।

अंगूठा दिखाना।

143. गल घोटीण।

गला घुटना।

किसी के साथ अन्याय होना।

144. ख्वार हैं बला धो धो टलि।

सिर से बला मुषकिल से टली।

145. आसमान थुक पड़ मुख।

आसमान में थूका पड़ा मुह में।

अपने से बड़े का अपमान किया स्वयं का अपमान हुआ।

146. गौ वास कुलौ नास।

गाँव का वास कुल का नाष।

विकास की कमी में प्रयुक्त मुहावरा।

147. असमानै उड़न।

आकाष पर दिमाग होना।

148. आन– कान करन।

अगर– मगर करना।

149. उजाडु

घर को बरबाद करने वाला।

150. खाक छानि है।

किसी चीज के लिए भटक जाना।

151. अखरण।

बुरा लगना।

152. अखोड़ि फोणि सबले चायो करम फोणि कैल चायो।

अखरोट फोणकर सब देखते हैं करम फोड़कर कौन देखता है।

153. इजुलि बाबुलि करण।

माँ बाप का नाम लेकर हाय तौबा करना।

154. उमर कुकरीण।

उम्र की कुगत होना।

155. इथा उथा चाँण।

इधर उधर देखना।

सहारे की उम्मीद करना।

156. उकाव–हुलार हुण।

उतार चढाव होना।

157. अकल वालौकि नौकराणि औरूकि महाराणि।

अक्ल वालौ की नौकरानी औरौं की महारानी।

श्रेष्ठ लोगों के संबंध से लाभ पाना।

158. उल्ट खस भुस ज्ञान पैली खाय पै स्नान।

उल्टा राजपूत ज्ञान में भूषा भरा हुआ पहले खाया फिर स्नान कियज्ञं

159. आपन जस मूख ल्ही बेर आछ।

अपना सा मुँह लेकर आया।

160. उल्लु मांसु खाइ हुण।

उल्लू का मांष खाया हुआ।

निर्णय लेने में असमथ्र व्यक्ति के लिए प्रयुक्त।

161. ऋद्यि सिद्व हुण।

सम्पन्नता होना।

162. उना मुनइ उभ खुट।

नीचे सिर ऊपर पैर।

163. इज्जत डुबण।

इज्जत डूबना।

164. अकास पतालौक अन्तर।

आकाष पाताल का अन्तर।

अत्यधिक अन्तर होना।

165. अकल भिडूण।

अक्ल भिड़ाना।

166. जां सब होसियार तां कच्यार।

जहां सब होषियार तहां कीचड़।

एक कार्य के लिए सब की सलाह मानने में कार्य का बिगड़ जाना।

167. अकला ख्वार रात पणन।

अक्ल पर रात पड़ना (मूर्ख होना)।

168. ऋण करण नक भुक रूण भल।

रिण लेना बुरा, भूका रहना भला।

169. अखाड़ छोड़न।

अखाडा छोड़ना। किसी काम से विरक्त होना।

170. इज लगौ ये लोकैकि बाब वी लोकैकि।

माँ कहे इस लोक की बाप कहे उस लोक की।

171. इज्जत बणून।

इज्जत बनाना।

172. उजड़ि किरमोइन पांख लाग्या।

उजड़ते समय चीटियों को पंख उग आते हैं।

173. अकल–उमर भैंट नि हुन।

अकल–उमर को भेंट न होना।

174. इथा उथा बै सुणन।

इधर उधर से सुनना।

175. इलम पड़न।

आदत पड़ना।

176. उच्चि ठोकण।

ऊँची हांकना।

177. उजड़न बाट ज्वे लागि धार।

उजड़ने का वक्त आया तो पत्नी भी धार लगी।

विपरीत परिस्थिति।

178. उमर गै बिति खाण पणि रुखि–तिति।

उम्र बीतने पर रूखा–सूखा खाना पड़ता है।

179. उल्ट उस्तरैल मुडन।

उल्टे उस्तरे से मूडनां

मूर्ख बनाना।

180. उल्टि बुद्वि सिकूण।

उल्टि बुद्वि सिखाना।

अनुचित बात को प्रेरित करना।

181. अकाल पडौ दुकालै भुखौ सुकाला बखत दुकालै भुखा।

अकाल हो या सुकाल दोनो समय भूखे अकिंचन का परिस्थिति से प्रभावित रहना।

182. एक्कै भौ तोलण।

एक ही कीमत लगाना।

183. अकट्टी हुंण।

किसी की बात को सहयोग न करना।

184. अकल वालौं हिं इसार काफि।

समझदार को इषारा काफी।

185. अकाला नाणतिन लूणा खाज।

बुरे बक्त की संतान के लिए नमक ही खाद्य।

186. अखाणजमूण।

अखाड़ा बनाना।

एक ही प्रकार के लोगों का जमघट होना।

187. इजाक नै बाबौक पिनाउ पातौक।

माँ का न बाप का न बाप का अरबी के कोमल पात का।

दूर का रिष्तेदार होना।

188. इन भ्यान च्याल।

ये हुए लड़के।

प्रसंसनीय संतान।

189. उचैण राखन।

भेंट रखना अथवा देवताओं का हिस्सा रखना।

190. उधार मांड़ि खाण दुनियांकि गालि खाण।

उधार मांग कर खाना दुनियां की गाली खाना।

191. उम्रौ छ्वट् बातू ख्वट।

उम्र का छोटा बातू का खोटा।

192. उल्टि कपाइ।

उल्टी खोपड़ी।

निर्बुद्वि होना।

193. ऊना खातिर भेड़ ल्हि वील सपासप कपास खै दे।

ऊन के लिए भेड़ ली उसने फटाफट कपास खा लिया।

194. एक खुट हिट नि सकन।

एक पैर चल नही सकता।

कुछ कार्यो में सहयोग की ही आवष्यकता होती है।

195. ऐबि हुण।

बुरी आदत होना।

196. औत है सौत भलि।

बांझपन से सौतन भली।

197. अंधा हात् कफुवा प्वाथ।

अंधे के हाथ कफुवा (सुन्दर पक्षी) के बच्चे।

198. अंधै जांठि।

अंधे की लकड़ी।

199. अगि बेताल जागण।

अगिया बेताल जागना। प्रेत बाधा।

200. उमंग हुण।

उत्साह होना।

201. अकलो ठपू लड़न जा्ल अघाड़ि अपू पिछाड़ि ढाल।

अक्ल का ठप्पू लड़ने जाए, आगे स्वयं पीछे ढाल।

202. उल्ट खुट भाजण।

उल्टे पैर भागना।

203. ख्वा्र पणन।

सिर पड़ना।

उत्तरदायित्व या भार पड़ना।

204. अघइनाकि दौड़ बैद्य तक,भुकै दौड़ गणतु तक।

तृप्त की दौड़ वैद्य तक भूखे की दौड़ गणतू वाले तक।

आवष्यकता के अनुसार कार्य करना।

205. गणत करण।

ज्योतिष या गणक से शुभ अषुभ पूछना।

206. ज्ड़ि काटि फांङ हा्थ ल्हिण।

जड़ काटकर फाङ हाथ लेना।

मूर्खतापूर्ण कार्य करना।

207. जस ज्याठज्यू उसै यौ, जस धान उसै ग्यू।

जैसे जेठ जी वैसे ही ये जैसे धान वैसे ही गेहूं।

208. जाँ बामण वां लंघण।

जहां ब्राह्मण वहां लंघन(उपवास)।

209. चैइयै रै जाण।

देखते रह जाना।

ठगा सा रह जाना।

210. जां रीस तां खीस।

जहां क्रोध वहां ईर्ष्या।

211. नाच न जाने आंगन टेड़ा।

नाच न जाने आंगन टेड़ा।

212. भलि भटेवै।

दूसरे के दुःख को देखकर खुःष होना।

213. पिण लगै।

प्रसव पीढा जैसी पीढा।

214. आपू राज बुकूं खाज।

खुद राजा खाए खाजा।

स्तर के अनुरूप कार्य न करना।

215. घर भितेर भ्यौव हुण।

घर के भितर ही भ्योल चट्टान होना।

कहीं सुरक्षित न होना।

216. चानि फुटण।

सिर फूटना।

दुर्दिन आना।

217. छींटा घा्घर में गजी टा्ल।

छींट के घाघरे में गजी की टल्ली।

218. छौंक लगूण।

छौक लगाना।

किसी बात के बीच में कुछ ऐसा कह देना जिससे बात बिगड़ जाए।

219. जड़ पकणन।

जड़ पकड़ना।

कमजोरी पकड़ना।

परिस्थिति के अनुरूप व्यवहार में परिवर्तन आना।

220. जां बिराउ नै तां मुस नाचनी।

जहां बिल्ली नही वहां चुहे नाचते हैं।

बिना भय के अराजकता होना।

221. मुख लै चूक लगाया।

अर्थ– मुंह में चूक (नीबू) लगा जैसा।

222. घात हलै।

देवता से इंसाफ मांगने जैसा।

क्रोध में आकर कोई काम करना।

223. ग्यू पिसी मनुवै पलथण।

गेहूं का आटा मडुवे का पलथण।

अच्छी वस्तु पर अपेक्षाकृत कम मूल्यवान का आवरण डालना।

224. घटौ जौ वैर लगूण।

घट्ट की तरह धार लगाए रहना।

खाते रहना।

225. गौ में रूल मडू खूल।

गांव में रहुंगा मडुवा खाउंगा।

226. घट नै घाट, अदम बाट।

घर न घाट आधी बाट।

असंगत स्थान।

227. घरी रूण।

घर में ही घर में रहना।

देवता का अवतरित न होना।

228. अङाल हालन।

आलिंगन करना।

किसी को गले से लगा लेना।

229. गौ त्यौर नौ म्यौर।

गांव तेरा नाम मेरा।

230. घट रहड़।

घट खिसकना।

अचानक बात बिगड़ना।

231. घर में दि नै बात, भ्यार मष्याव।

घर में उजाला नही बाहर मषाल।

प्रदर्षन प्रिय।

232. घुरड़ कै चांठ प्यार।

हिरन को सूखी चट्टान प्यारी।

233. चटणि बणूण।

चटनी बनाना।

बुरी तरह पीटना।

234. छितिरियाट करण।

छितिरियाट करना।

ओछापन करना।

235. जग हंसाइ हुन।

जग हसाई होना।

उपहास का पात्र बनना।

236. सरग–पताल

धरती से आसमान तक।

237. कमर टुटि गै।

हताष हो जाना।

238. किताबोक किड़।

अधिक पढ़ने वाला।

239. परान में परान ऊन।

जान में जान आना।

240. टाङ अणून।

हक्षतक्षेप करना।

241. अघिल खुट हात हालन।

कोई काम सुनने से पहले ही आपत्ति जता देना।

242. राइ को पहाड़ बनून।

छोटी बात को बढा–चढा कर बोलना।

243. थुकीनाक थूक चाटन।

अपनी कही बात से मुकर जाना।

244. चित्त मरन।

चित्त मारना।

मन मारना।

245. पापड़ बेलन।

कष्ट सहना।

246. अंध कोट्कौ काणौ सयानों, सबन सुङणौ आपू खाणौ।

अंधों के दुर्ग में काना होषियार।

247. इकौइ लागण।

असहाय होना।

248. अंध गोरुक द्याप्त आ्पण।

अंधी गाय के देवता अपने।

249. उभ हुण बोटाक च्ाल –च्ाल पात।

उभरते बिरुवे के चिकने–चिकने पात।

250. एक खुट में नाचण।

एक पैर पर नाचना।

सारा काम अकेले करना।

251. अंधा हात आरसी दी देख आ्पण मूख।

अंधे के हाथ आइना दिया देख अपना मुंह कहा। अपमानित करना।

252. मुखूनि चूक ढोलीन।

मुंह में नीबू गिरा जैसा।

किसी को देखकर मुंह फुला लेना।

253. अंधौ मुख भिण उजाड़ि।

अंधे का मुंह दिवार की ओर।

254. जां् तक आ्पण वां तक बैर।

जहां तक अपन वहां तक बैर।

नातेदारी में बैर बने रहना।

255. खाणी दाण हुंण।

खाने के दान होना।

भाग्य में सुख होना।

256. अकल ऐछ ठोकर खै बेर।

अकल आती है ठोकर खाकर।

257. ले खुटी बाग।

ले बाथ पैर।

जान बूझकर मुसीबत में पड़ना।

258. अकल खुलण।

अकल आना।

259. अकल दाण फुटण।

अक्ल का दांत आना।

260. अकल हराण।

अक्ल खोना।

261. अकला घ्वाड़ दौणून।

अक्ल के घोडे दौड़ाना (कल्पना करना)।

262. अकला पिछाड़ि लट्ठ हुण।

अक्ल के पीछे लट्ठ होना(मूर्खतापूर्ण कार्य करना।

263. अकारथ हुँण।

अकारथ होना(व्यर्थ होना)।

264. अकाव् पणन।

अभाव होना।

265. अकास चांण।

आकाष तांकना।

(किंकर्तव्यविमूढ होना।

266. अगास दि बालण।

आकाष में दिए जलाना।

अत्यधिक खुषी व्यक्त करना।

267. अगु बणन।

अगुवा बनना। नेतृत्व करना।

268. अघाड़ि नै पिछाड़ि।

आगे न पीछे।

असहाय।

269. इचौव माट हुण।

किनारे की मिट्टी होना।

270. इज्जत करण।

इज्जत करना।

271. इज्जत ख्वेण।

इज्ज्त खोना।

272. इज्जत धरण।

इज्जत बचाना।

273. इथा उथा करण।

इधर उधर करना

चुगली करना।

274. इथा दुनियां उथा पलटण।

इधर की दुनिया उधर हो जाना।

प्रलय हो जाना।

275. इनर लोक।

अत्यधिक वैभव संपन्न होना।

276. इल्लत लागण।

मुसीबत लगना।

277. इषार पर नाचन।

इषारों पर नाचना।

278. एड़ि घिसै हुन।

पैर घिसाई होना।

279. इटो जवाब पत्थरलै दिण।

ईट का जवाब पत्थर से देना।

280. इमाण ठोकण।

इमान ठोकना।

281. उज गलण।

उर्जा की कमी होना।

282. उधार दिण दुष्मनी ल्हिण।

उधार देना दुष्मनी लेना।

283. उनीण।

बादल घिर आना।

284. उरीण।

बदल उतर आना।

285. उमर जैंछि नकि आदत नै जांनि।

उम्र जाती है गलत आदत नही जाती।

286. उमाव ऊण।

उबाल आना।

दिल भर आना।

287. उल्ट कुच बाटण।

उल्टा झाणू बनाना।

विपरीत कार्य करना।

288. उल्टि गंग बहण।

उल्टी गंगा बहना।

अनहोनी बात होना।

289. उल्ट बोयो तो लै सुल्औ जामौल।

बीज उल्टा बसेकर भी सीधा ही जमेगा।

अच्छे कार्य कभी व्यर्थ नहीं जाते।

290. उसै जाण।

सूज जाना। नाराज होना।

291. ऊन छ ह्यूनैकि कि डर।

ऊन है शीत ऋतु का क्या डर।

292. इक ककौल द्वि भयात भल।

एक तो अकेला होता है दो हुए तो अच्छा होता है।

293. एक गौक नौ पधान।

एक गांव के नौ प्रधान।

294. इति श्री है गे।

अन्त होना।

295. एक घाघरि छोपन

बराबर बच्चे।

296. ऐ पड़िया पौण।

आ पड़े तो मेहमान।

297. ओच्छ्याट करण।

ओछापन करना।

298. औच्छै प्रीत बालू भीत।

ओछे की प्रीत रेत की दिवार।

299. ओछै जांण।

अस्त हो जाना।

300. औकात दिखूण।

औकात दिखाना।

असलियत का परिचय देना।

301. औताब हुण।

नामोनिषान मिट जाना।

302. औसाण ऊण।

असहज होना।

303. कंटक लागण।

दोष लगना।

304. कच्च पड़न।

निर्बल पड़ना।

305. कच्च कांठिक।

कच्चे शरीर का।

306. कचकचाट करण।

बकबक किए जाना।

307. कै खू कै बुकू।

किसे खाऊ किसे चबाऊ होना।

308. कच्यार उछालण।

कीचड़ उछालना।

निंदा परक बातें करके किसी को अपमानित करना।

309. कठवा बाब हुन।

बुरा पिता होना।

310. कठु हुन।

नीच होना।

311. कमर कसण।

कमर कसना।

हिम्मत जुटाना।

312. करम पिणाणा।

कर्म पिणाना।

दुष्कर्मो का फल मिलना।

313. करम फुटण।

कर्म फूटना।

भाग्य फूटना।

314. करमै लेख।

कर्मो की लेख।

भाग्य निर्धारण होना।

315. कलि कलि पणन।

मलाल रहना।

316. कल्ज फुकीण।

कलेजा फूकना।

आन्तरिक क्षोभ होना।

317. कल्ज बैठण।

कलेजा बैठना।

निरुतसाहित होना।

318. कसक लागणि।

महसूस होना।

319. काज सवारन।

मिलजुलकर कार्य करना।

320. काटि खांहु ऊण।

काट खाने को आना।

321. काटी नाक छोपण।

कटी नाक ढकना।

जैसे तैसे इज्जत बचाना।

322. कान बुजण।

कान बंद करना।`

अनसुना करना।

323. कान बै निकालण।

कान से निकालना।

किसी की बात पर ध्यान न देना।

324. क्ान बकुरण।

कांटे उठना।

रोमांचित होना।

325. क्ान मारण।

कांटा मारना।

तीखापन कम करना।

326. कान लगूण।

कान लगाना।

ध्यान लगाकर किसी की बात सुनना।

327. का्ना कुबई हुण।

कंधे पर कुथली होना।

वैरागी होना।

328. का्निम बैठावण।

कंधे में बैठाना

अधिक सम्मान देना।

329. कुकुरै जून हुन।

कुत्ते की योनि होना।

340. खिसै जांण।

खिसिया जाना।

341. कौतिक हुण।

मेला होना।

330. कौ बासण।

कौआ बोलना।

मेहमान आगमन का संकेत मिलना।

331. कौ मामा म्मौर गोत्र।

कहो मामा मेरा गोत्र।

बिना वजह टकराव करना।

332. कौ मारौ हाड़ नै मांस।

कौए को मारा हाड़ मिला न माङष।

प्रयास व्यर्थ होना।

333. गरदन फंसण।

गरदन फसना।

संकट में आना।

334. खाल मोटि हुनि।

मोटी चमड़ी होना।

जल्दी प्रभावित न होना।

335. खा्ल पड़न।

खाला पड़ना।

अचानक किसी अंग का निर्जीव होना।

336. खालि ढोल मिठ बोल।

खाली ढोल मीठे बोल।

अन्दर से खाली मुंह से मीठा।

337. खाप सुकण।

मुँह सूकना।

338. खाप चलूण।

मुंह चलाना।

मुह लगना।

339. खार खाण।

चिढ आना।

खार खाना।

340. खार खै बैठण।

खार खाकर बैठना।

ताक में रहना।

खायो पियो बम बजायो।

खाया पिया मस्त रहा।

341. खिण मिणु हुण।

क्षीण एवं दुर्बल होना।

अस्तित्व षून्य होना।

342. खिरखण्ड हुन।

स्वादिष्ट भोजन होना।

343. घाम लगूण।

धूप लगाना।

वस्तु की बरबादी करना।

344. खुट खजाण।

पैर खुजलाना।

एक जगह स्थिर न रहना।

345. खुट टेकीण।

पैर टिकना।

स्थाई प्रतिबंध होना।

346. खुट ध्वे बेर पिण लैक।

पैर धोकर पीने लायक।

अत्यधिक गरिमामय।

347. खुट्ट पल्टीण।

पैर पलटना।

अत्यधिक थकावट से पैर सीधे न कर पाना।

348. खुट भीं नि पणन।

पांव जमीन पर न पड़ना।

उपलब्धियों से परम सन्तुष्ट होना।

349. खोट लगूण।

खोट लगाना।

कलंक लगाना।

350. खोरि आग लागण।

सिर में आग लगना।

दुर्भाग्यपूण्र होना।

351. खोरि च्यापण।

सिर दबाना।

हताष होना।

352. खोरि टटकूण।

सिर झाणना।

निरुपाय होकर खीजना।

353. खोरि बुलै।

खोपड़ी बोलती है।

विवके भ्रष्ट होना।

354. ख्वार छार फोकीण।

सिर में राख पड़ना।

अभागा होना।

355. कौसौल करण।

कयौल करना।

अपनी–अपनी हांकना।

356. कौ राज हुण।

कौए का राजा होना।

स्वार्थी तत्वों का वर्चस्व होना।

छिपे–छिपे रहना।

357. छोड़ी गौं हु न्यूत कैको।

छोडे हुए गांव को नयौता किसका।

उपेक्षित करना।

358. ख्वार में चढन।

सिर में चढना।

हावी होना।

359. ख्वार में चढून।

सिर में चढाना।

मुंह लगाना।

360. गंग नाण।

गंगा स्नान करना।

उत्तरदायित्व से मुक्त होना।

361. ख्वरौ बोज कानिम उतरौ।

सिर का बोझ कान में आया।

क्रमषः राहत मिलना।

362. गंज्याड़ जस हुन।

केकडे जैसा होना।

कुरूप होना।

363. गणेस में दुब धरण।

कार्य प्रारम्भ करना।

364. कम खै गम खै निर्भय रै।

कम खाया गम खाया निर्भय रहा।

सहनषील और अल्पहारी।

365. गरमा गरमी हुण।

क्रोधपूर्ण बहस होना।

366. गल घोटण।

गला घोटना।

367. गल छुटूण।

गला छुटाना।

जैसे तैसे छुटकारा पाना।

368. गध्यार बगण।

गधेरे बहना।

बरसाती नाले बहना, बर्बाद होना।

369. आब नाफाक दिण छन।

अब फायदे के दिन हैं।

समय का अनुकूल होना।

370. ख्वार खाजि लागन।

सिर में खुजली लगना।

371. गुरगुरि निकालण।

गुरगुरी निकालना।

बदला लेना।

372. गौक वास भल सुवास।

गांव का वास स्वच्छ वातावरण।

373. गौव जौ पसरण।

गह सा पसरना।

आलसी होना।

374. गौं सिरि गै बटि।

गांव की श्री का अनुमान गलियारे से।

अपना हक जताना।

375. घट्ट में पाणि उण।

घट्अ में पानी आना।

अच्छे दिन आना।

376. कुनव बुसीण।

कुनबा नष्ट होना।

कुनवा नष्ट होना।

377. घड़ संग बेउण।

घडे के साथ विवाह करना।

औपचारिकता करना।

378. जस खै अन तस बणौ तन।

जैसा खाओ अन्न वैसा बने तन।

379. घर न बार मुहल्लेदार।

घर बार कुछ नही नाम मुहल्लेदार।

नाम के विपरीत गुण।

380. चित बुझण।

मन सन्तुष्ट होना।

381. घराक धान पराल भाय।

घर के धान पराल बराबर।

सहज वस्तु की कद्र न करना।

382. चरमरै खबर कां तक कर।

चरमर की खबर कहां तक की जाए।

अभाव ग्रस्त की मदद कब तक की जाए।

कडुवा बोलना।

383. चपत लागण।

चपत लगना।

आघात लगना।

384. चिङान हुण।

चिङान होना।

चिडचिड़ाहट होना।

385. छिरी ऊण।

छिर आना।

दुर्बल होना।

386. जग्य में बिघन।

यज्ञ में विघन।

कार्य में बाधा पड़ना।

387. जसो बुड़ तसो कुड़।

जैसा बूढा वैसा कुटुम्ब।

388. एक्कै गीद छि सांसै गै दि।

एक ही गाना था शायं काल को ही गा दिया।

389. जां रुजगार ता घरबार।

जहां रोजगार वहां गृहस्थी।

390. जुलुम हुण।

अपराध होना।

अनहोनी होना।

391. हात्ति पेट जिरै फांक।

हाथी के पेट में जीरा।

392. काल अ़क्षर भैस बराबर।

काला अक्षर भैंस बराबर।

393. पर घरौक भाणो ।

पराए घर का बर्तन।

पुत्री के संबंध में।

394. पानि में गाण।

नवजात षिषु।

395. गलमल गास।

प्यार से खिलाया गया भोजन

396. गणेष में दुब धरौ।

कार्य का शुभारम्भ करना।

397. नाक नै ओध्या ।

नाक ऊँची मत करो।

398. त्वे हीं हरिया है र्‌यो।

तुझे आसान लग रहा है।

399. गाल–गाल बिति रै।

आफत गले पड़ी है।

400. सुरतुरिया ।

यहाँ की वहाँ, वहाँ की यहाँ करने वाला।